।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

उभयवेदान्ताचार्य द्वैताद्वैतमार्त्तण्ड, न्यायरत्न, तर्कतीर्थ, विद्यावागीश, सर्वशास्त्रनिष्णात, पूज्यचरण-

श्रीअमोलकरामजी शास्त्री का जीवन चरित्र

स्वामी श्रीजयरामदेवजी

।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः।।

उभयवेदान्ताचार्य द्वैताद्वैतमार्त्तण्ड, न्यायरत्न, तर्कतीर्थ, विद्यावागीश, सर्वशास्त्रनिष्णात, पूज्यचरण-

श्रीअमोलकरामजी शास्त्री का जीवन चरित्र

स्वामी श्रीजयरामदेवजी

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

विद्वन्मूर्धन्य पं. श्रीअमोलकरामजी शास्त्री का पावन स्वरूप

मनुष्य जन्म मिल जाय, यही सर्वप्रथम परम मंगलकारी होता है। परात्पर परब्रह्म अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक रसिकेश्वर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अहैतुकी कृपा का ही परिणाम है कि भारतवर्ष में जन्म प्राप्त हो, उस पर भी मनुष्य जन्म उस पर भी विप्रवंश में, उस पर भी वैष्णव परिवार में जन्म लाभ मिल जाय यह सब जन्म जन्मान्तर में समर्जित सुकृत एवं भगवत्सपर्या का सुफल है। लोक में ऐसे पुण्यश्लोक विरले ही होते हैं जो अपने जन्ममात्र से उस कुल के पूर्व के सात एवं पश्चात् के सात पीढियों को भवसागर से तार देते हैं। अथवा श्रीसर्वेश्वर प्रभु ही अपनी कृपा कर देते हैं।

दुर्लभो मानुष देहो देहीनां क्षणभंङ्गुरः।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम्।।

इस श्रीमद्भागवत महापुराण के वचनानुसार पूर्णतः चरितार्थ करने वाले गौड़विप्रवंशाववंस विद्वन्मूर्धन्य विद्यावागीश श्रीअमोलकरामजी शास्त्री भी उन पुण्यश्लोकों में सर्वदा अपने यशः स्वरूप से विराजमान रहेंगे। जिनके जन्म लाभ से माता-पिता सहित सम्पूर्ण परिवार कृतकृत्य होगया। उनके वैदुष्य का स्मरण श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय सहित सम्पूर्ण विद्वत् जगत् में किया जाता है।

परम मनीषि शास्त्रीजी का जन्म धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के पास में स्थित पुण्डरीक नामक ग्राम में फाल्गुन कृष्ण द्वादशी वि० सं० १९२९ में हुआ। आपके पिताश्री परम धार्मिक विद्वान् पं० शालिग्रामजी उपाध्याय के नाम से सुप्रसिद्ध थे। आपको पुत्ररत्न के रूप में प्राप्त कर धर्मपत्नी सहित पं० श्रीशालिग्रामजी उपाध्याय का गार्हस्थ्य जीवन अवश्यमेव सर्वथा धन्यतम बन गया।

अपने बाल सुलभ चरित्रों से माता-पिता को सुख प्रदान करते हुये बालक अमोलक, अमोलक रूप से विद्यापारंगत होकर श्रीधामवृन्दावन में सर्वशास्त्र निष्णात श्रीअमोलकरामजी शास्त्री शास्त्रचिन्तन के साथ भगवदाराधना में पूर्णतः तल्लीन होगये। आपके इस श्रीधाम निवास प्रसङ्ग ने आपकी निष्ठा, श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय, सिद्धान्त, रसोपासना, परब्रह्मयुगल-स्वरूप श्रीराधासर्वेश्वर भगवच्चरणारविन्द में प्रगाढ से प्रगाढ होती गई। फलस्वरूप इस सम्प्रदाय में प्रसिद्ध महात्मा श्रीस्वामिनीशरणजी से विधिवत् वैष्णवी दीक्षा प्राप्त की।

उस समय अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज विराजमान थे। पूज्य आचार्यचरणश्री ने निम्बार्काचार्यपीठ के उत्तराधिकारी के रूप में वर्तमान पीठाधीश्वर जिनका बाल्यकाल का नाम श्रीरतनलाल था को चयनकर आषाढ शुक्ल द्वितीया रविवार (रथयात्रा महोत्सव) वि. सं. १९९७ दिनांक ७/७/१९४० को शरणागति विरक्त दीक्षा प्रदान कर परमानुगृहीत किया। महन्तवर्य श्रीधनञ्जय-दासजी महाराज के संरक्षकत्व में आचार्यश्री को श्रीवृन्दावनप में अध्ययन का शुभारम्भ हो गया। यह प्रसङ्ग संक्षेप में प्रस्तुत इसलिये कर रहा हूं कि इसका विशद वर्णन हम आचार्यपीठ से सम्पादित पीठ परिचय से लेकर अनन्त श्रीविभूषित जगदुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवा-चार्यजी महाराज द्वारा विरचित श्रीस्तवरत्नाञ्जलि एवं अन्यान्य कृतियों से अध्ययन कर सकते हैं।

आपश्री ने शास्त्रीजी से सम्बन्धित अपने अध्ययनकालिक कैशोरवयः के संस्मृति का वर्णन करते हुये निर्देशित किया कि व्याकरण-न्याय-दर्शनादिक विविध विषयाश्रित प्रश्न कर ज्ञानवर्धन कराना शास्त्रीजी का परम ध्येय था। बटवट आदि का सन्धि विच्छेद से लेकर विविध संस्कृत पद पंक्ति का निरन्तर समुच्चारणादि में विशेष आग्रह रहता था। और मन्त्रराज के जप के लिए कम से कम प्रतिदिन एकादश माला जाप होना परमावश्यक है, ऐसा आपका परमोद्देश्य था।

शास्त्रीजी से वेदान्तदर्शन शास्त्राध्ययनार्थ बड़े-बड़े विद्वद्वृन्द भी इच्छुक रहते थे। पं. श्रीसोहनलालजी चतुर्वेदी से पूज्य आचार्यचरणों ने

व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया। आपश्री ने बताया कि वे भी शास्त्रीजी से दर्शनशास्त्र का अध्ययन करते थे। प्रसङ्गवश समय में विषय प्रस्तुति न होने के कारण आवेशवश शास्त्रीजी ने चतुर्वेदीजी के कपोल स्थल पर हस्तप्रहार कर दिया। इससे वे उनसे अध्ययनार्थ नहीं गये। एक दिन बिहारीजी महाराज के दर्शन कर शास्त्रीजी लौट रहे थे और चतुर्वेदीजी दर्शनार्थ जा रहे थे। शास्त्रीजी ने चतुर्वेदीजी को देख लिया, किन्तु चतुर्वेदीजी का ध्यान शास्त्रीजी पर नहीं गया। मार्ग में ही शास्त्रीजी ने चतुर्वेदीजी के पैर पकड़ लिये और कहा कि हमारा जन्म जिस स्थान में (कुरुक्षेत्र) हुआ, वहाँ आवेश की मात्रा स्वभावतः कुछ होही जाती है अतः आप किसी प्रकार का अन्यथा विचार न करें पुनः अध्ययनार्थ आते रहें। यह प्रसङ्ग शास्त्रीजी के विनयपूर्ण सरलता की उत्कृष्टता को स्वभावतः परिलक्षित करता है।

एवमेव इधर निम्बार्काचार्यपीठ में जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबाल-कृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के गोलोकधाम गमन के पश्चात् वि. सं. २००० ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया शनिवार तदनुसार दि० ५/६/१९४३ को पूज्य आचार्यचरण चौदह वर्ष के लघु अवस्था में ही आचार्यपीठासीन हुये। अतएव आपश्री का श्रीवृन्दावन अध्ययनार्थ पधारना हुआ एक वर्षानन्तर अजमेरस्थ नव निर्मित श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर प्रतिष्ठा पर पुनः आचार्यपीठ आगमन हुआ आपश्री जब पुनः श्रीवृन्दावन पधारे तब श्रीअमोलकरामजी शास्त्री के अस्वस्थता का समाचार अवगत हुआ तो तुरन्त श्रीगोपालदासजी को उनके पास भेजा।

जब श्रीगोपालदासजी शास्त्रीजी से मिलने उनके निवास पर पहुँचे, जिस कक्ष में शास्त्रीजी विश्राम कर रहे थे, श्रीगोपालदासजी को देखते ही तुरन्त उठकर पलंग से नीचे उतरकर प्रणाम किया श्रीगोपालदासजी द्वारा बार-बार रोकने पर भी वे न माने। यह कहा कि आप जैसे उत्तम सन्त का सम्मान करना हमारा परम धर्म है। स्वयं रोग से बाधित होते हुये भी अपनी अस्वस्थता का ध्यान न करते हुये श्रीगोपालदासजी से पूज्य आचार्यचरणों की कुशलक्षेम की जानकारी ली एवं प्रणाम निवेदन करने को कहा। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय, आचार्यपीठ एवं आचार्यचरणों के प्रति आपकी अगाध निष्ठा को इस प्रसङ्ग से समझा जा सकता हैं।

एवमेव जब गोपालदासजी ने शास्त्रीजी के स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी पूज्य आचार्यश्री को निवेदित की। कुछ काल पश्चात् वि. सं. २००१ पौष शुक्ल १० रविवार को शास्त्रीजी अपना पाञ्चभौतिक शरीर का त्यागकर यशः शरीर से नित्यनिकुञ्जलीला में गोलोकधाम गमन किया। यह हृदय विदारक समाचार से निम्बार्क सम्प्रदाय सहित समस्त विद्वत् समुदाय निःस्तब्ध रह गया। पूज्य आचार्यश्री ने भी यह समाचार अवगत कर परम दुःख की अनुभूति की ऐसा लगा निम्बार्क सम्प्रदाय का एक अहर्निश चमकने वाला दिव्य तेज नक्षत्र अन्तर्हित होगया।

सुनने में यह भी आया है कि शास्त्रीजी द्वारा विरचित परपक्षगिरिवज्र का खण्डन करने का समाचार यत्र-तत्र प्रसारित होने लगा। श्रीकरपात्रीजी महाराज इसका खण्डन करेंगे। शास्त्रीजी से शास्त्रार्थ करेंगे, इसके लिये श्रीजी कुंज में विशाल सभा का आयोजन हुआ। अनेक स्वनामधन्य मूर्धन्य विद्वान् वहाँ एकत्रित हुये स्वयं श्रीकरपात्रीजी महाराज भी पधारे। घुटनों तक की धोती एवं हाथ में लकुटी लिये सभा में जैसे ही श्रीशास्त्रीजी पधारे उपस्थित सभी विद्वज्जनों ने उनका स्वागत किया और आसन ग्रहणानन्तर जैसे ही शास्त्रीजी ने करपात्रीजी महाराज से अपना भाव प्रकट किया कि परपक्षगिरिवज्र पर कहिये आपको कैसी जिज्ञासा है? किस विषय से आप सम्मत नहीं। ऐसे कहने पर श्रीकरपात्रीजी महाराज मौन ही रहे एवं वहाँ से हटात् प्रस्थान कर गये।

वस्तुतः पं० श्रीअमोलकरामजी शास्त्री अपने शरीर से हमारे बीच नहीं परन्तु आपने सम्प्रदाय सिद्धान्त विषयक जिन बड़े-बड़े ग्रन्थों की मौलिक रचना एवं व्याख्यायें की ऐसी अपने अमूल्य कृतियों के धवलकीर्ति स्वरूप आप सर्वदा सम्प्रदाय एवं साधक सुधीजनों के बीच में अमर रहेंगे।

--नेपालवास्तव्य मुकुन्दशरण उपाध्याय, व्याकरणाचार्य
प्रधानाध्यापक-राजकीय प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय
घसवां की ढाणी, सुरसुरा जि० अजमेर (राज०)

श्रीअमोलकरामजी शास्त्री

का

जीवन - चरित्र

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के समीप पुण्डरीक[1] नाम का एक ग्राम है। वहाँ पं० शालिग्रामजी उपाध्याय गौड़विप्र प्रसिद्ध थे। उनका सर्वत्र सम्मान था, उपाध्यायजी परम धार्मिक और विद्वान थे। आपका सदाचार मय जीवन आदर्श स्वरूप था। आपके गृह में विक्रम संवत् १६२६ फाल्गुन कृष्ण द्वादशी को पूज्य पं० अमोलकरामजी शास्त्री का जन्म हुआ ।

बाल चरित्र में आप अत्यन्त गम्भीर रहते थे। आपकी विलक्षण बुद्धि देखकर सभी आश्चर्य करते थे। कुछ बड़े होने पर आपने काशी में जाकर संस्कृत विद्याध्ययन की प्रबल लालसा प्रकट की। काशी में आने पर अनेकों विद्वानों से सत्सङ्ग मिला। बड़े प्रेम से अध्ययन करने लगे। सर्वदा आप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते। आपकी कुशाग्र बुद्धि देखकर बड़े-बड़े विद्वान् आपका सम्मान करने लगे।

उन्हीं दिनों काशी में एक परम तपस्वी महात्मा गङ्गा तट पर मिले। वे महात्मा महान् सिद्ध योगी थे। उनका सत्सङ्ग करने गङ्गा पार नित्य जाने लगे। उनकी वाणी से उपदेश सुनते हुए आपको जगत् से पूर्ण वैराग्य हो गया। आप साधु होकर तपस्या करने की इच्छा करने लगे। सोचा कि ''बिना तपस्या के भगवान् का साक्षात्कार नहीं प्राप्त होगा।'' दृढ निश्चय कर लिया कि हिमालय पर जाकर तप करें। इनके मन की जानकर महात्माजी ने कहा--''आप साधु बनकर तपस्या करने की इच्छा न करें। आप विद्या ही पढें। आपके द्वारा बहुत बड़े-बड़े कार्य होंगे। और आप भगवान् का दर्शन चाहते हो सो भगवान् आपको बिना तपस्या के ही दर्शन देंगे। यही हमारा

---

१. इसी पुण्डरीक ग्राम में श्रीवेदव्यासजी का आश्रम था। यहीं शुकदेवजी का जन्म हुआ। यहीं पर सजूमा स्थल में शुकदेवजी की मूर्ति गुफा में है। श्रीअमोलकरामजी शास्त्री भी श्रीवेदव्यासजी के वंश में ही उत्पन्न हुये थे। अब भी इस परिवार में व्यासजी की पूजा तथा उनकी आन और रीति रिवाज चली आ रही है।

आशीर्वाद है। और यही प्रभु की आज्ञा भी है आपके लिये।

विद्याध्ययन

महात्माजी की आज्ञा मानकर आपने तपस्या का विचार छोड़कर विद्या में मन लगाया। सहसा एक दिन आपको भगवान् श्रीकृष्ण का दर्शन हुआ। स्वप्न में देखा कि भगवान् कदम्ब वृक्ष पर बैठे बंशी बजा रहे हैं और इनको अपनी ओर बुला रहे हैं। बस, उसी दिन वृन्दावन जाने का समल्प कर लिया। वृन्दावन का कोई नाम भी लेता तो आप प्रेमाश्रु बहाने लगते हृदय में वृन्दावन-दर्शन की प्रबल लालसा ऐसी बढी कि-काशी छोड़कर वृन्दावन के लिये चल पड़े। मन में बड़ी प्रबल उत्कण्ठा इस बात की थी कि, वृन्दावन की सघन कुञ्जों में भजन करने पर साक्षात् भगवान् के दर्शन अवश्य ही हो जायगा। वह तरङ्ग, वह चटपटी विचित्र थी--

मन में लागी चटपटी कब निरखूं घनश्याम।
'नारायण' भूल्यौ सकल, खान पान विश्राम।।

वृन्दावन में आकर आप बड़ी आनन्दमय स्थिति में पहुँच गये। कहीं रासलीला देखते, कहीं कुञ्जों में बैठकर विरह में करुण क्रन्दन करते, कहीं, सत्सङ्ग में रसमयी कथाएँ सुनते। साथ ही संस्कृत विद्यालय में पढते भी रहते। जब प्रेम उमड़ता तो रात्रि में यमुना किनारे बैठकर विरहमय पदों का गान करते। बड़ी सुन्दर लीलायें भी आपको ध्यान में दिखाई देती। कभी-कभी ध्यान में भगवान् से वार्तालाप भी होने लगता। परीक्षा देने के लिये आपको काशी जाना पड़ा, परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। व्याकरणाचार्य तथा वेदान्ताचार्य परीक्षाएँ पास करने पर आपको नवद्वीप भेजा गया। प्रथमश्रेणी में उत्तीर्ण होने के कारण आपकी महान् विलक्षण बुद्धि देख बड़े-बड़े अध्यापक आश्चर्य करते थे। नवद्वीप पाठशाला के प्रधान अध्यापक श्रीभट्टाचार्यजी आपकी कुशाग्र बुद्धि की बड़े प्रशंसा करते तथा आपकी श्रीकृष्ण प्रीति देखकर इतने प्रसन्न हुए कि अपने भवन में ही आपको रखा। यहाँ तक कि सारा खर्च इनको अपने पास से देते। नवद्वीप में आपकी अपार प्रतिष्ठा हुई। भट्टाचार्यजी आपका नाम कभी नहीं लेते। जब बुलाना होता ता-'वृन्दावन वाले महाराज' कहकर पुकारते थे। न्याय रत्न, तर्कतीर्क आदि उपाधियाँ आपको प्राप्त हुई। समय-समय पर आपको कई पदवी प्राप्त हुई। जिनसे ही

आपकी महान् योग्यता का पता चलता है- जैसे--''उभय वेदान्ताचार्य' न्यायरत्न तर्कतीर्थ, विद्यावागीश, द्वैताद्वैत मार्तण्ड, सर्वशास्त्र निष्णात आदि अनेकों उपाधियाँ प्राप्त थी।

प्रतिष्ठा

विद्याध्ययन के पश्चात् आपको रतलाम नगर में संस्कृत विद्यालय के प्रधान अध्यापक पद पर नियुक्त किया गया। किन्तु वहाँ आपका मन न लगा। वृन्दावन में इधर श्रीरङ्ग पाठशाला के संचालकों ने आपको बुलाया। इसे भगवान् की प्रेरणा मानकर तत्काल वृन्दावन आगये। वृन्दावन में सत्सङ्ग का आनन्द प्राप्त होने से महान् हर्ष हुआ। श्रीरङ्ग पाठशाला के संचालक श्रीसुदर्शनाचार्यजी थे। इनका आपसे बड़ा स्नेह था। जब पाठशाला में आप विद्यार्थियों को पडाने लगे तो आपकी पढाने की शैली देख सब आश्चर्य करते थे। एक दिन एक विद्यार्थी एक खिलौना ले आया और उसे पाठशाला की अलमारी में रख दिया। श्रीसुदर्शनार्यजी आपके साथ जब पाठशाला में आये तो उस खिलौने को देख बोले-''यह स्त्री की मूर्ति यहाँ कौन लाया है। ब्रह्मचारियों के लिये स्त्री का दर्शन निषेध है।'' यह सुन एक विद्यार्थी बोला-''यह स्त्री नहीं व्रज की गोपी है। भगवान् की सखी है।'' यह शब्द सुनते ही श्रीअमोलकरामजी ने उस शिलौने को साष्टाङ्ग प्रणाम किया! श्रीसुदर्शनाचार्यजी के नेत्रों से प्रेमाश्रु बहने लगे और उन्होंने भी साष्टाङ्ग प्रणाम किया।

श्रीवृन्दावन में आपने श्रीगुरुदीक्षा श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के प्रसिद्ध महात्मा श्रीस्वामिनीशरणजी से दीक्षा ली। यह महात्मा मोरकुटी पर बरसाने में रहते थे। ४ हाथ का लम्बा शरीर था। प्रत्येक मनुष्य का शरीर अपने हाथ से ३।। हाथ लम्बा होता है। पर यह सबसे ऊँचे थे। द्वापर के से लगते थे। आपके मुख पर अपार तेज था। बाल ब्रह्मचारी थे। अठारहौं अध्याय गीता कण्ठ थी। केवल छाछ पीकर तपस्या करते थे। आप में बड़े-बड़े चमत्कार देखे गये। जिज्ञासु भक्त आपके उपदेश सुनते-सनते तृप्त नहीं होते थे।

एक बार आपका स्वास्थ्य खराब हो गया तो वृन्दावन जाने की इच्छा प्रकट की। ऊँचे पहाड़ से नीचे उतरने की शक्ति नहीं थी। श्रीअमोलकरामजी ने कहा--''मैं आपको हाथों पर उठा ले चलूँगा।'' तो

आप बोले-'मेरा शरीर भारी है। तुम कैसे ले चलोगे। पहाड़ से नीचे उतरना है।' श्रीअमोलकरामजी ने कहा-'गुरुदेव ! आपकी कृपा से ले चलूँगा।' ऐसे कह हाथों पर उठा लिया और चल दिये। पहाड़ से नीचे उतार लाये। फूल की तरह उनका शरीर हलका हो गया और मार्ग भर गुलाब के फूलों की सुगंध शरीर से आती रही।

साक्षात्कार

ऐसे गुरुदेव की कृपा से आपको बरसाने के गहवरवन में श्रीराधाजी का साक्षात्कार हुआ। ३ दिन आप गहवरवन में व्रत करके रहे थे। इसी प्रकार बरसाने और नन्दग्राम के बीच के दो मील वन क्षेत्र में एक रात्रि रहे थे। वहाँ साक्षात् श्रीललिताजी का साक्षात्कार प्राप्त हुआ था।

वृन्दावन में आप श्रीरङ्ग पाठशाला में अध्ययन कार्य आनन्दपूर्वक करते थे कि इन्हीं दिनों आपके निम्बार्की-तिलक को देख कुछ लोग वहाँ आपसे चिढ़ने लगे। यह देख आपकी इच्छा हुई कि इस पाठशाला का कार्य छोड़ दें। परन्तु जीविका का प्रश्न था। दूसरे दिन प्रातःकाल ४ बजे जब नित्य की भाँति स्नान करने गये तो स्नान करके जब वस्त्र पहन रहे थे तो वहाँ एक बारह वर्ष की कन्या प्रकट हुई और मधुर स्वर से बोली-'नौकरी छोड़ दो, सिंह होकर तुम टुकड़ों की चिन्ता क्यों करते हो। क्या तुमको विश्वास नही है। और मुझे पहचानते हो या नहीं ?'

आश्चर्य से आप उस कन्या की ओर देखेने लगे। अन्धकार होने से आप ठीक से न देख सके। बोले-'मैंने आपको कभी नहीं देखा। मैं नहीं पहचान सका। तब वह कन्या हँसकर बोली-'पश्य!' ऐसे कह वह दिव्यरूप हो गयी। चन्द्रमा का सा प्रकाश छा गया। उस तेज मंडल के मध्य गौरवर्ण मनोहर रूप का दर्शन हुआ। उस दिव्य रूप का दर्शन करते ही आप मूर्छित होकर गिर पड़े। मूर्छित दशा में दिव्य गोलोकधाम देखा। वहाँ पर सखी मण्डल के मध्य सखी रूप में अपने को देखा और श्रीप्रिया-प्रियतम के समीप जाकर वार्तालाप किया। श्रीराधाजी ने हाथ पकड़ कर आपको अपने समीप बैठा लिया और कहा-'बस, यहीं रहो।'

मूर्छा भङ्ग होने पर देखा सूर्योदय हो चुका था। शरीर काँप रहा था, चित्त में अलौकिक दृश्य भरा था। चलना कठिन था। ऐशी दशा में धीरे-

धीरे चलते हुए आरहे थै। कि–श्रीरामबाग के महात्मा श्रीसंकर्षणदासजी ने देखा। श्रीसंकर्षणदासजी ने आपसे ही वेदान्त पढा था। वे इनको गुरु तुल्य मानते थे। उन्होंने आपके शरीर पर रोमांच कंपन, अश्रु, गद्गद कण्ठ आदि सात्विक भावों को देखा, ऐसी दशा का रहस्य पूछा। बहुत हठ करने पर आपने बता दिया। श्रीस्वामिनीजी का दर्शन जैसे–जैसे हुआ सब सुनाया उसी दिन से आपने श्रीरङ्ग विद्यालय त्याग दिया। दूसरे ही दिन आपको वृन्दावन में ही श्रीराधावल्लभजी के मन्दिर के पास वाली पाठशाला में प्रधान अध्यापक पद प्रदान कर दिया गया।

बरसाना आपको बहुत प्रिय था। वहाँ जाकर बराबर आप कई दिनों तक रहा करते। एक बार पीरी पोखर से प्रेम सरोवर की ओर वन मार्ग से जारहे थे सहसा वन में श्रीराधाजी सखियों के साथ फूल तोड़ते हुए दियाई दी। उस झाँकी का दर्शन कर आप वेसुध होगये। किन्तु, चलते ही रहे। प्रेम सरोवर से बहुत आगे बढ गये। घण्टों बाद होश आया तब पीछे लौटे।

एक बार वृन्दावन में मदनमोहनजी के मन्दिर के पास जो गली है उस गली से आ रहे थे। सन्ध्या का समय था। देखा कि–'गलवैयाँ दिये हुए प्रिया–प्रियतम सामने आरहे हैं। आपने दौड़कर चरण पकड़ना चाहा कि–भगवान् अन्तर्धान हो गये। उस दिन से जब तब आप गली में जाते और ठहर–ठहर कर चारों ओर देखते हुए चलते कि–कहीं फिर भगवान् वैसे ही दर्शन देने आ जायें।

आपका श्रीयमुनाजी से बड़ा अनुराग था। प्रातः स्नानार्थ जाते और ग्यारह बजे तक लौटते। कालीदह पर आप निवास किया करते थे। दह के सामने कच्चे घाटों पर आप घण्टों मानसी ध्यान भावना में समाधि लगाये बैठे रहते थे। एक बार यमुना तट पर ध्यान में ऐसे तदाकार हुए कि–दिन भर बैठे रहे शरीर का भान नहीं रहा। रात्रि में श्रीकिशोरीदासजी महाराज ने आपको सँभाला और कहा कि–'यमुना तट पर सर्दी में आप ऐसे न बैठा करें। स्वास्थ्य खराब हो जायेगा।' तो आपने उत्तर दिया–'मुझे भजन करने से न रोकिये। नर शरीर बार–बार नहीं मिलता।

एक बार श्रीसंकर्षणदासजी के साथ आप वृन्दावन की परिक्रमा में जा रहे थे। मार्ग में दाऊजी के मन्दिर के पास कदम्ब वृक्ष के ऊपर वंशी

बजाते भगवान् को देखा। आपने हाथ का धक्का लगाते हुए संकर्षणदासजी से कहा-'देखो! क्या है।' उन्होंने देखा कि-'भगवान् खड़े वंशी बजा रहे है।'

ऐसे ही इन्दौर के डाक्टर पाण्डेजी ने आपसे कहा कि हमें कभी कुछ दर्शन नहीं होता तो आपने कहा--आज आपको दर्शन होगा। डटकर भजन करो, मन लगाओ।' आपकी कृपा से उसी रात्रि पाण्डेजी को प्रिया-प्रियतम का दिव्य दर्शन हुआ। उसी दिन से पाण्डेजी की आप में अपार श्रद्धा होगई।

श्रीसंकर्षणदासजी से आपने अपने शरीर त्यागने का समय बहुत पहिले ही बता दिया था। वि० सं० २००१ पौष शु० १० रविवार को शरीर त्यागकर दिव्य गोलोक में निवास प्राप्त किया। बड़े-बड़े विद्वान् आपके पढाये हुये विद्यमान हैं, सबको आपका अभाव अखरा। जगह-जगह शोक सभाएँ हुई, देश-देश में अपका सुयश गान होता है।

ग्रन्थ रचना--

आपके द्वारा संस्कृत साहित्य का महान् उपकार हुआ। बड़े२ ग्रन्थ आपने निर्माण किये। आपकी श्लोक रचना शैली बड़ी सुन्दर है। आपके रचे ग्रन्थ विद्यालयों में पढाये जाते हैं। आपके ग्रन्थों की सूची इस प्रकार है-

१. परपक्षगिरिव्रज की व्याख्या
२. वेदान्तकौस्तुभप्रभा की व्याख्या
३. आत्म परमात्म तत्वादर्श
४. वेदान्त रत्नमाला
५. वेदान्त तत्ववोध की व्याख्या
६. आचार्य स्तवमाल
७. अष्टादशसिद्धान्त पदों की टीका
८. छान्दोग्य उपनिषद् भाष्य
९. वेदान्त रत्न मंजूषा की व्याख्या
१०. अष्टादश उपनिषद् भाष्य

पूर्णाञ्जलि--

श्रीशास्त्रीजी का साधु होने का निश्चय था, किन्तु भगवान् की आज्ञा से आपने विरक्त वेष नहीं लिया। आपका विवाह वरबस कर दिया गया। आपकी धर्मपत्नी को एक सिद्ध महात्मा ने एक फल दिया और कहा-'तुम इस फल को खा लो तुमको एक पुत्र प्राप्त होगा जो भगवान् का ही अंश होगा। वह पुत्र तुमको भवसागर से तारने वाला होगा। ऐसा ही हुआ भी-आपके एक परम सुन्दर साधु स्वभाव का पुत्र हुआ। उसका नाम भी आपने

साधूराम रखा। यह परम सुशील, धर्मात्मा और परोपकारी थे। इन साधुरामजी की पत्नी परम पतिव्रता तपस्विनी श्रीयमुनादासी हुई। श्रीसाधुराम जी के दो कन्या हुई-१-श्रीललितादेवी, २-श्रीजगेद्रादेवी। यह दोनों कन्यायें परम भक्त हैं और समृद्ध सम्पन्न परिवार में सब प्रकार सुखी हैं।

श्रीशास्त्रीजी महाराज का वृन्दावन में श्रीगिरिधारीजी के मन्दिर में विशेष रहना होता था। लेखन कार्य यहीं बैठकर करते थे। आप कहते थे- श्रीगिरिधारीजी के मन्दिर में सतयुग है यहाँ से बाहर निकलते ही कलियुग दीखता है। श्रीगिरिधारीजी के मन्दिर में एक दिन कथा हो रही थी। दैवयोग से उस दिन पंडितजी को पहनाने के लिये माला कहीं नहीं मिली। उस समय पंजाब की एक वृद्धा माता श्रीअम्मीदेवी ने श्रीगिरिधारीजी के सामने प्रार्थना की कि कहीं से आज माला मिल जाय तो बड़ी कृपा हो। प्रार्थना करते ही अम्मादेवी के हाथ में एक फूल माला प्रकट हो गई। उसमें दिव्य सुगन्ध थी। वह माला पंडितजी को पहना दी। अम्मादेवी ने यह रहस्य श्रीअमोलकरामजी शास्त्री की पुत्रवधू को जाकर सुनाया।

श्रीशास्त्रीजी ने परमधाम पधारने के पश्चात् भी कई बार भक्तों को दर्शन दिये हैं। आदेश तथा उपदेश दिये हैं। आपकी महिमा अनन्त है।

श्रीअमोलकराम शास्त्रीजी के उपदेश--

१. भगवान् के प्रति दृढ विश्वास रखो कि वह सर्व समर्थ हैं और हमारी सब प्रकार रक्षा तथा भरण-पोषण करेंगे।
२. भगवान् की शरणागति लेकर अन्य किसी का सहारा मत चाहो।
३. भक्ति में जो भी बाधक हों उन सबका त्याग करो।

*

पुस्तक प्राप्ति स्थान –

अखिल भारतीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

फोन नं. : 01497–227831

मो. नं. : 9414496966, 9414022655

प्रथमावृत्ति – 1000 वि0 सं0 2026

द्वितीयावृत्ति – 1000 वि0 सं0 2070

:: मुद्रक ::

श्रीनिम्बार्क–मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

पाँच रुपये